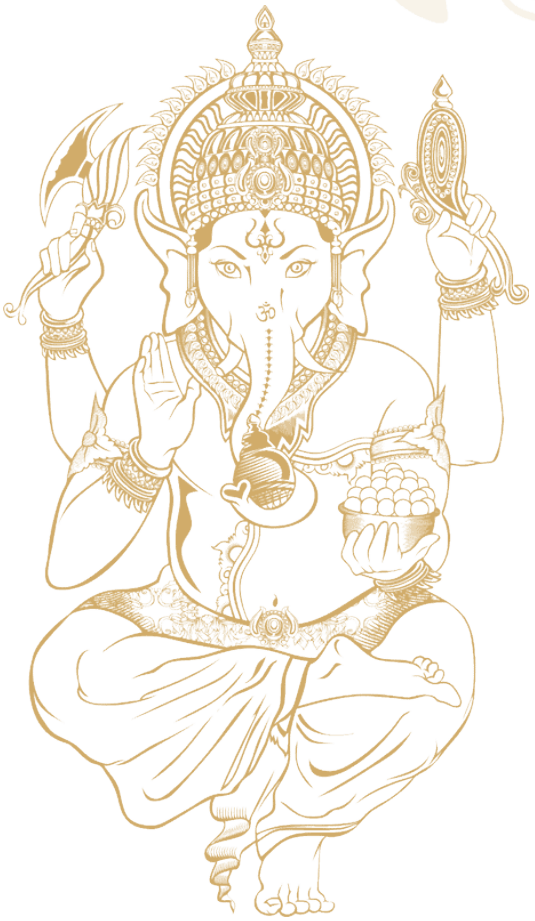

Mr. ankit

Ms.vrisha

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121288304

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
16/02/1994	जन्म तिथि	10/08/1999
बुधवार	दिन	मंगलवार
घंटे 11:45:00	जन्म समय	22:55:00 घंटे
घटी 11:45:23	जन्म समय(घटी)	42:28:58 घटी
India	देश	India
Jaipur	स्थान	Jaipur
26:53:00 उत्तर	अक्षांश	26:53:00 उत्तर
75:50:00 पूर्व	रेखांश	75:50:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:40	स्थानिक संस्कार	-00:26:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:02:50	सूर्योदय	05:55:24
18:19:01	सूर्यास्त	19:08:16
23:46:46	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:54

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 3वर्ष 5मा 28दि		04:34:34	वृष	लग्न	मेष	11:04:06	शनि 3वर्ष 7मा 10दि	
चन्द्र		03:34:01	कुंभ	सूर्य	कर्क	23:47:46	केतु	
16/08/2023		06:40:29	मेष	चंद्र	कर्क	14:07:56	21/03/2020	
16/08/2033		21:08:10	मक	मंगल	तुला	22:35:46	22/03/2027	
चन्द्र	16/06/2024	11:43:54	कुंभ व	बुध	कर्क	05:54:14	केतु	17/08/2020
मंगल	15/01/2025	20:38:25	तुला	गुरु	मेष	10:47:57	शुक्र	17/10/2021
राहु	17/07/2026	10:49:20	कुंभ	शुक्र व	सिंह	08:38:27	सूर्य	22/02/2022
गुरु	16/11/2027	08:24:01	कुंभ	शनि	मेष	23:00:14	चन्द्र	23/09/2022
शनि	16/06/2029	04:28:03	वृश्चि व	राहु	कर्क	19:07:10	मंगल	19/02/2023
बुध	15/11/2030	04:28:03	वृष व	केतु	मक	19:07:10	राहु	09/03/2024
केतु	16/06/2031	00:27:18	मक	हर्ष व	मक	20:51:00	गुरु	13/02/2025
शुक्र	14/02/2033	28:22:05	धनु	नेप व	मक	08:43:03	शनि	24/03/2026
सूर्य	16/08/2033	04:14:33	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	13:54:30	बुध	22/03/2027

लग्न-चलित

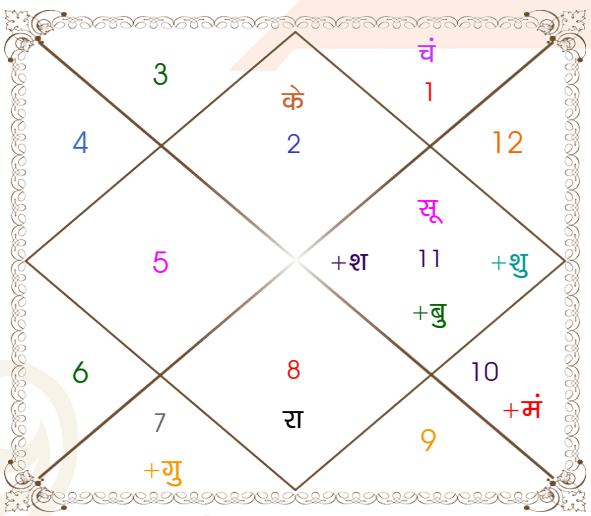

लग्न-चलित

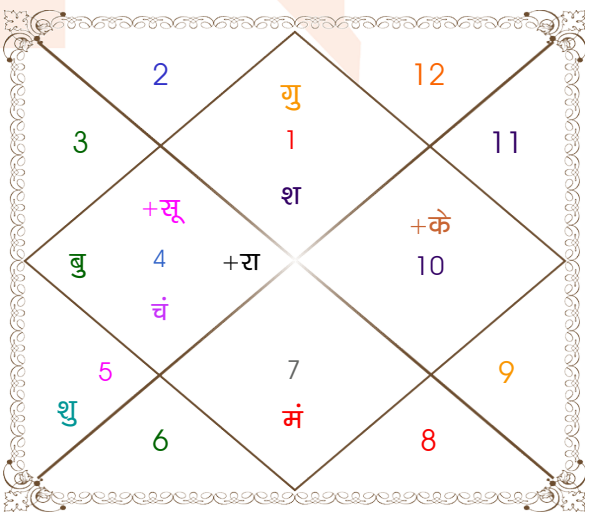

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	अश्व	मेष	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	कर्क	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	30.50		

डतण्ंदापज का वर्ग सिंह है तथा Ms.vrisha का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्ंदापज और Ms.vrisha का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्ंदापज मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

Ms.vrisha मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि Ms.vrisha कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डतण्ंदापज कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण दापज तथा Ms.vrisha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।